रास्ते में मिली एक लड़की

यह एक बहुत साल पुरानी कहानी है। जैपुर नामक एक शहर पर एक बूढ़ी औरत रहती थी। उस औरत का नाम है मलिका। मलिका एक साधारण परिवार में से है। मलिका की दो बेटा हैमोहन और राकेश। मोहन और राकेश दोनों के शादी हो चुका था। असल में जैपुर शहर सिर्फ़ नाम में शहर था वो एक गाँव है। इस लिए मोहन और उसके बाई राकेश असली शहर जहाँ बड़े बड़े घर, पेड, असपताल आदि सब कुछ है वहाँ अपने अपने परिवारों के साथ जाना चाहता है।

लेकिन उन दोनों की माँ यानी मलिका इसके खिलाफ़ है। क्योंकि मलिका नहीं चाहती थी कि वो और उसकी परिवार जैपुर छोड़कर मत जाओ। मोहन का बीवी का नाम मेश्रा है। राकेश का बीवी का नाम मैत्री थी। मेश्रा और मैत्री दिखने में

बहुत सुन्दर है। लेकिन मेघ्रश को मैत्री से तुलना करेगा तो मेघ्रश का रंग कुछ कम था। जब मेहमान घर में आती थी तब सब मेघ्रश का घर की नौकरानी समझाती थी। ऐसे कहने के साथ साथ वो हँसती भी है। जब अपनी दोनों बहुओं के साथ मलिका बाहर जाते है तो तब सब लोग मलिका और मैत्री से बात करता था। लोग मेघ्रश की मजाक उडाकर मलिका से पूछती थी कि: "क्या तुम अपनी एक बहू के साथ किसको लाया है"। "घर तुम्हारी घर की नौकरानी तो नहीं है न"।

यह सब बात सुनकर मेघ्रश को बुरा लगा था। मेघ्रश की साथ-साथ मैत्री को भी यह सारी बातें सुनकर बुरी लगती थी। दोनों बहुओं मलिका को ममी और ममी जी कहकर पुकारती थी। मेघ्रश की रंग कम होने के कारण मलिका उसे बात करने का मौका, नहीं देती थी। मलिका

अपना बेटा मोहन का बीवी मेम्रश को सिर्फ गोडा रंग कम होने के कारण पसंद नहीं करता था। मालिका मेम्रश ये बात तक नहीं करती थी।

मालिका का भावना यह था कि कम रंग वाली औरत एक अच्छी औरत नहीं थी। वो एक बुरा औरत है। वो औरत दूसरों से बुरा बरताफ़ भी करती है। वह औरत समाज की नीची वरग से है। और कम रंग वाले औरतों को सिर्फ गोड़ा रंग का बच्चा होगो। मालिका एक पोता को चाहती था। सुन्दर अच्छी रंग का पोता। मालिका लड़कों को पसंद करता था। एक औरत होने के नाते मालिका चाहती थी कि उसकी बेटो को सिर्फ बेटो ही हो।

मालिका ऐसा इसलिए चाहती थी क्योंकि मालिका की बचपन में मालिका की एक छोटा और बड़ा भाई थे। मालिका

के पापा का नाम था बालू। बालू सिर्फ अपने बेटों को पसंद करता था। बालू अपने बेटों को खूब खाना खिलाना, पहने केलिए वस्त्र आदि लेकर काम के बाद घर आना था। बालू मालिका केलिए कुछ भी खरीदकर नहीं लाता था। बालू औरत और लड़की दोनों से नफरत करता है। वो सिर्फ अपना माँ और बिवी से प्यार करता था। लेकिन अब उनसे भी नफरत करता है। क्योंकि जब बालू एक छोटा बच्चा का उम्र में था तब माँ उसे छोडकर किसी और के साथ चल गई। मालिका की माँ उस की जन्म का वक्त मर गया।

अपने जीवन के दो प्रधान औरतों ने उसे छोड़कर चल गई। इसलिए उस दिनों से बालू औरतों से और मालिका से नफरत करने लगा। बालू मालिका से बात तक नहीं करता था। सिर्फ अपने बड़े बेटा को पालने केलिए उसने एक दूसरी शादी

किया। बालू को अपने दूसरी शादी में एक बेटा हुआ। बालू बेटियों को भी पसंद करता था। लेकिन जब उसके पहले बीवी मर गया उसे लता की एक बेटी का जन्म होने से उसका बिवी मर गई। जब बालू का बडे बेटा का जन्म हुआ तब तो उसका बीवी को कुछ नहीं हुआ। बालू जानता है कि लड़का और लड़की के समाज में समान अधिकार है। लेकिन जब वो मल्लिका से गुस्सा होता है तो कहता है कि "लडकों को समाज में संपूर्ण अधिकार है। लड़की समाज में कुछ भी नहीं है।"

जब मल्लिका बेडा हुआ तो लोग उसे एक औरत होने के नाते और रंग कम होने के वजे से उसकी मज़ाक उडाते थे। मल्लिका बचपन से यह सब देखकर और सुनकर आ रहा है। यह सब देखने और सुनने के बात उसकी सोच भी इसमें बदल गई। इसलिए मल्लिका एक सुन्दर देखने वाला

अच्छे रंग का पोते को पसंद करना था।

कुछ सालों के बाद मोहल्ला बदल गया। मंथरा को कम रंग वाला बेटी और मैत्री को सुन्दर रंग वाला बेटा हुआ। मालिका मैत्री से कुछ अधिक खुशी थी। लेकिन मंथरा से खुशी नहीं हुआ। मालिका ने मंथरा और उसकी बेटी का धक्का मारकर घर के बाहर भेक दिया।

कुछ सालों के बाद जब दोनों बच्चे बड़े हुए तो मैत्री का बेटा एक बुरा लड़की हो गया। मंथरा का बेटी अच्छी लड़की हो गई। तब मालिका को अपनी गलती के बारे में समझ में आया। उसे अपनी सोच के बारे में और अपनी सोच की गलती के बारे में सच आ गया। मालिका ने मंथरा और उसकी बेटी से माफी मानी।

मोरल :- इनसानों को अपने रंग या वस्त्र के बारे में नहीं अपना स्वभाव से तुलना करना चाहिए।